E-ISSN-2584-2870 https://doi.org/10.65833/dbs.2026.336

केन्द्रीयसंस्कृतविश्वविद्यालयः
श्रीरघुनाथकीर्तिपरिसरः, देवप्रयागः
देवभूमि-सौरभम्
E-ISSN 2584-2870
Devabhūmisaurabham

Vol 3 Issue 1 Jan-June 2026 Devabhūmisaurabham International Journal of CSU Shri Raghunath Kirti Campus Devprayag Uttarakhand India

ज्योतिषशास्त्र में रोहिणी शकटभेद

डॉ. सुरेश शर्मा,
सहायकाचार्य, ज्योतिषशास्त्र विद्याशाखा,
केन्द्रीय संस्कृतविश्वविद्यालय,
श्रीरघुनाथकीर्ति परिसर, देवप्रयाग।

डॉ. ब्रह्मानन्द मिश्रा
सहायकाचार्य एवं समन्वयक,
ज्योतिषशास्त्र विद्याशाखा,
केन्द्रीय संस्कृतविश्वविद्यालय,
श्रीरघुनाथकीर्ति परिसर, देवप्रयाग।

सारांश- भारतीय ज्योतिष शास्त्र में कालगणना एवं सम्पूर्ण फलादेश का मुख्य आधार नक्षत्र है। नक्षत्र उन तारों का योग है जो गतिहीन है तथा आकाशमण्डल में विशेष आकृतियों में प्रत्यक्ष रूप से देखे जा सकते हैं। इन्हीं नक्षत्रों में रोहिणी नक्षत्र जो शकट की आकृति का है, का संहिता शास्त्र की दृष्टि से विशेष महत्त्व है। कोई ग्रह जब रोहिणी नक्षत्र में प्रवेश करता है तो ज्योतिषशास्त्र के अनुसार वह रोहिणी शकटभेद कहलाता है। इस आकाशीय घटना का संहिता शास्त्र में विशेष फल कहा गया है। संहिता शास्त्र के अनेक ग्रन्थों में इसके समष्टिगत प्रभाव का वर्णन किया गया है। इस शोधपत्र में नक्षत्रों के स्वरूप रोहिणी शकट भेद का स्वरूप एवं प्रभाव का विवेचन किया गया है।

कूट शब्द–क्रान्तिवृत्त, नक्षत्र, रोहिणी नक्षत्र, शकट भेद, तारामण्डल, उल्का पिण्ड,धूमकेतु तोरण आदि।

भूमिका - आकाश में दिखाई देने वाले प्रकाशपुंजों की गति स्थिति तथा भूमि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन जिस शास्त्र के द्वारा किया जाता है उस शास्त्र का नाम ज्योतिष शास्त्र है। रात्रि में चन्द्र की किरणों से रहित आकाश में असंख्य तेजपुंज दृष्टिगोचर होते हैं, परन्तु ज्योतिषशास्त्र में केवल 27 नक्षत्रोंएवं7 ग्रहोंका वर्णन विशेष रूप से किया गया है। यद्यपि संहिता ग्रन्थों में सप्तर्षितारामण्डल, उल्का पिण्ड, धूमकेतु आदि का भी वर्णन प्राप्त होता है। वैदिक संहिताओं में नक्षत्रदर्शक ऋषियों का वर्णन प्राप्त होता है, जिससे यह सिद्ध होता है कि वैदिक काल में ऋषिगण आकाश का निरन्तर अवलोकन करते थे। निरन्तर वेध एवं अनुसंधान कर उन्होने निष्कर्ष निकाला कि असंख्य ज्योतिपुंजों में केवल कुछ ही पिण्ड ऐसे हैं जिनका प्रभाव मानव जीवन पर होता है। इनमें कुछ पिण्ड स्थिर

अर्थात् गति से रहित हैं जिन्हें नक्षत्र की संज्ञा दी गई तथा कुछ पिण्ड ऐसे हैं, जो गतिशील है तथा निश्चित समय में पृथ्वी की परिक्रमा करते हैं, ऐसे पिण्डों को ग्रह कहा गया है। निरन्तर अनुसंधान से उन्होने पाया कि ग्रहों एवं नक्षत्रों के परस्पर सम्बध का मानव जीवन पर विशेष प्रभाव होता है। आगे चलकर नक्षत्रों के योग सेराशियों की परिकल्पना की गई। तथा राशियों में ग्रहों के संचार से शुभाशुभ विचार किया जाने लगा। अतः ज्योतिषशास्त्र में सभी प्रकार के शुभाशुभ विचार का मुख्य आधार नक्षत्र हैं।

नक्षत्रों का स्वरूप- यद्यपि अपरिमित गगनमण्डल में असंख्य गतिहीन तारे हैं परन्तु 27 तारापुजों के प्रभाव को देखते हुए इन्हें नक्षत्रों की संज्ञा प्रदान की गई हैं। यह गतिहीन तारे हैं जिनकी परिभाषा शास्त्र में **"क्षरति इति नक्षत्रम्"**कही गयी है।

प्रत्येक नक्षत्र एक से अधिक तारों के योग से निर्मित है। प्रत्येक नक्षत्र में तारों की संख्या भिन्न-भिन्न है। आचार्य रामदैवज्ञ के अनुसार अश्विनी के 3, भरणी के 3, कृत्तिका के 6, रोहिणी के 5, मृगशीर्ष के 3, आर्द्रा के १, पुनर्वसु के ४, पुष्य के ३, आश्लेषा के ५, मघा के ५, पूर्वाफाल्गुनि के २, उत्तराफाल्गुनि के २, हस्त के ५, चित्रा के १, स्वाती के १, विशाखा के ४, अनुराधा के ४, ज्येष्ठा के ३, मूल के ११, पूर्वाषाढ़ा के २, उत्तराषाढ़ा के २, अभिजित् के ३, श्रवण के ३, धनिष्ठा के 4, शतभिष के १००, पूर्वाभाद्रपद के २, उत्तराभाद्रपद के २, रेवती के ३२, तारे होते हैं। [1]

इन तारों की स्थिति क्रान्तिवृत्त अर्थात् सूर्य के भ्रमणवृत्त के समीप स्थित है। सूर्य एक वर्ष अर्थात् 365 दिनों में मेषादि से प्रारम्भ करके मीन पर्यन्त 360 अंश का भ्रमण जिस वृत्ताकार कक्षा में करता है, उस भ्रमण वृत्त का नाम क्रन्तिवृत्त है। इस वृत्त के दोनों ओर इन ताराओं की स्थिति है। इनमें से कुछ तारे उक्त वृत्त से उत्तर में तथा कुछ तारे दक्षिण में स्थित है। इन तारों का क्रान्तिवृत्त से अंशात्मक अन्तर उत्तर अथवा दक्षिण शर कहलाता है। ज्योतिषशास्त्रानुसार किसी भी ग्रह अथवा नक्षत्र का क्रान्तिवृत्त से उत्तर अथवा दक्षिण का अंशात्मक अन्तर शर कहलाता है। ग्रह भ्रमणशील है अतः ग्रहों के शर बढते घटते रहते हैं। परन्तु नक्षत्र स्थिर है अतः नक्षत्रों के शर स्थिर हैं। शंकरबालकृष्णदीक्षित द्वारा लिखित भारतीय ज्योतिषशास्त्र नामक पुस्तक में अनेक ग्रन्थों में कहे गए नक्षत्रों के शरों का संकलन किया गया है, जो शर निम्न प्रकार से है[2] -

---

[1]मुहूर्त्तचिन्तामणि,नक्षत्रप्रकरण,श्लोक-58

[2]भारतीय ज्योतिष शास्त्र पृ-34

CELESTIAL LATITUDES OF JUNCTION STARS

Serial No.	Stars	Direction of Latitudes	Sūrya Siddhānta		Brahmagupta Siddhānta		2nd Ārya Siddhānta		Sārvabhauma Siddhānta		Venkatesh B. Ketkar		Author's opinion	
			°	′	°	′	°	′	°	′	°	′	°	′
1	Aśvinī	N	9	11	9	8	10	0	10	55	8	29	8	29
2	Bharaṇī	N	11	6	11	11	12	0	12	56	10	26	10	26
3	Kṛttikā	N	4	44	4	15	5	0	4	44	4	2	4	2
4	Rohiṇī	S	4	49	4	28	5	0	4	40	5	28	5	28
5	Mṛgaśiras	S	9	49	9	48	10	0	10	13	13	23	13	23
6	Ārdrā	S	8	53	10	50	11	0	11	7	16	3	6	45
7	Punarvasu	N	6	0	6	0	6	0	6	0	6	40	6	40
8	Puṣya	N	0	0	0	0	0	0	0	0	0	4	0	4
9	Āśleṣā	S	6	56	6	56	7	0	7	4	5	5	10	59
10	Maghā	N	0	0	0	0	0	0	0	0	0	28	0	28
11	P. Phālgunī	N	11	19	11	14	12	0	12	42	9	42	9	42
12	U. Phālgunī	N	12	5	12	2	13	0	13	55	12	16	12	16
13	Hasta	S	10	6	10	4	10	0	12	4	12	11	12	11
14	Citrā	S	1	50	1	50	2	0	1	52	2	3	2	3
15	Svatī	N	33	50	33	41	37	0	41	5	30	49	30	49
16	Viśākhā	S	1	25	1	18	1	30	1	25	1	48		
17	Anurādhā	S	2	52	1	39	3	0	1	50	1	58	1	58
18	Jyeṣṭhā	S	3	50	3	22	4	0	3	37	4	33	4	33
19	Mūla	S	8	48	8	19	9	0	8	40	6	36		
20	Pūrva Āsāḍhā	S	5	28	5	18	5	20	5	22	6	27	2	7
21	Uttara Āsaḍhā	S	4	59	4	59	5	0	5	1	3	27	N1	27
	Abhijit	N	59	58	61	56	63	0	62	14	61	44	61	44
22	Śravaṇa	N	29	54	29	56	30	0	30	5	29	18	29	18
23	Dhan'ṣṭhā	N	35	33	35	32	36	0	26	25	33	2	33	2
24	Śatabhisak	S	0	28	0	17	0	20	0	20	0	23	0	23
25	P. Bhādrapadā	N	22	30	22	26	24	0	26	3	19	23	19	23
26	U, Bhādrapadā	N	24	1	23	56	26	0	28	28	25	41	12	36
27	Revatī	S	0	0	0	0	0	0	0	0	0	13	0 3	13 4 }

नक्षत्रों का नामकरण –

प्रत्येक नक्षत्र में कहे गए तारों को आपस में जोडने से जो आकृति निर्मित होती है उस आकृति के आधार पर ही नक्षत्र का नामकरण ऋषियों द्वारा किया गया है। अश्विनी आदि नक्षत्रों की आकृति क्रम से इस प्रकार है- अश्विनी का स्वरूप अश्व के मुख की तरह, भरणी का योनि की तरह, कृत्तिका का क्षुर (छूरा) जैसा, रोहिणी का शकट की तरह, मृगशिरा का मृग के सिर की तरह, आर्द्रा का मणि के समान, पुनर्वसु का गृह सदृश, पुष्य का बाण के समान, आश्लेषा का चक्राकार, मघा का गृह जैसा, पूर्वाफाल्गुनि का मञ्च (मचियाँ) की तरह, उत्तराफाल्गुनि का चारपाई की तरह, हस्त का हथेली के समान, चित्रा का मोती की तरह, स्वाती का प्रवाल (मूँगा) की तरह, विशाखा का तोरण के समान, अनुराधा का पके चावल (भात) की तरह, ज्येष्ठा का कुण्डल के समान गोल, मूल का सिंह के पूँछ के समान, पूर्वाषाढ़ा का हाथी दाँत की तरह, उत्तराषाढ़ा का मञ्च (मचिया) की तरह अभिजित का त्रिकोणाकार श्रवण का त्रिचरण (वामनाकार) धनिष्ठा का मृदंग सदृश शातभिषा का वृत्ताकार पूर्वाभाद्रपद का मंच सदृश उत्तराभाद्रपद का युगल (दो समान तारे) के समान तथा रेवती नक्षत्र की मृदङ्ग की तरह आकृति है।

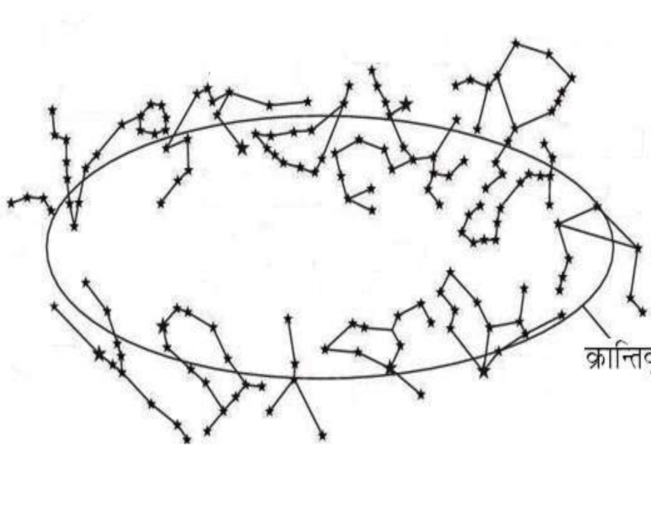

रोहिणी शकटभेद -

ज्योतिषीशास्त्रीय ग्रन्थों के अनुसार रोहिणी नक्षत्र 5 ताराओं का योग है। इन तारों से आपस में शकट (गाडी) की आकृति का निर्माण होता है। अतः रोहिणी नक्षत्र का स्वरूप ऋषियों ने शकटाकार कहा है। नाडीक्रान्ति वृत्त के संपात स्थान से क्रान्तिवृत्त में मेषादि 12 राशियों के स्थान है। अतः क्रान्तिवृत्त में वेध से रोहिणी नक्षत्र के तारे की स्थिति वृष राशि के 17 अंश पर दिखाई देती है।

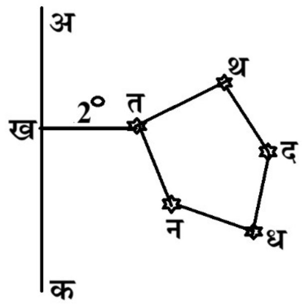

जैसा कि चित्र में देखा जा सकता है त थ द ध न पांच ताराओं से निर्मित रोहिणी नक्षत्र है। अ क क्रान्तिवृत्त है। क्रान्ति वृत्त के ख बिन्दु से सर्वाधिक समीपस्थ त बिन्दु की दूरी 2 अंश है तथा ख बिन्दु वृष राशि के 17 अंश पर प्राप्त होता है। अतः जब कोई ग्रह वृष राशि के 17 अंश पर होता है तथा उसका उत्तरी शर 2 अंश से अधिक होता है तो वह इस शकट में प्रवेश करता है अर्थात् इस शकट का भेदन करता है। इसी को ऋषियों ने रोहिणी शकटभेद कहा है। जैसा कि सूर्यसिद्धान्त में कहा गया है -

वृषे सप्तदशे भागे यस्य याम्योंऽशकद्वयात् ।

विक्षेपोऽभ्यधिको हन्याद् रोहिण्याशकटं तु सः।।[3]

ब्रह्मसिद्धान्त में भी इसका लक्षण इस प्रकार कहा गया है। -

विक्षेपोंऽशद्वितयादधिको वृषभस्य सप्तदशभागे।

यस्य ग्रहस्य याम्यो भिनत्ति शकटं स रोहिण्याः।।[4]

अर्थात वृषराशि के 17 वें अंश पर स्थित जिस ग्रह का दक्षिण विक्षेप 2 अंश से अधिक होता है वह ग्रह रोहिणी नक्षत्र के शकट को भेद करता है। रोहिणी नक्षत्र 5 तारों के योग से निर्मित हैं। इन तारों का आपस में योग करने से शकट गाड़ी की आकृति निर्मित होती है। अतः रोहिणी नक्षत्र की आकृति शकटाकार है। इन पांच तारों में सबसे उत्तर वाले तारे का दक्षिण विक्षेप 2 अंश 35 कला है। इस रोहिणी के योग तारे का दक्षिण शर 5 अंश तथा 32 कला है। जिस ग्रह का दक्षिण विक्षेप इन दो सीमाओं के मध्य अर्थात् 2 अंश 35 कला से अधिक तथा 5 अंश 32 कला से अल्प होता है, वह ग्रह रोहिणी नक्षत्रकी शकटाकारआकृतिमें प्रवेश करता है। इसी को रोहिणी के

[3]सूर्यसिद्धान्तः, भग्रहयुत्यधिकारः - 13

[4]ब्राह्मस्फुटसिद्धान्तः, भग्रहयुत्यधिकारः - 11

शकट का भेदन कहते हैं। नक्षत्रों के योग से राशियों का निर्माण होता है। प्रत्येक नक्षत्र में चार-चार चरण तथा 9 चरणों की एक राशि होती है। वेध से यह नक्षत्र वृष राशि के 17 अंश पर उपलब्ध होता है, अतः कोई ग्रह जब वृष राशि के 17 वें अंश पर होता है। तथा उसका शर 2 अंश से अधिक हो तो वह ग्रह रोहिणी शकट का भेदन करता है।

विदित है कि सभी ग्रह अपनी-अपनी कक्षाओं में भ्रमण करते हैं। परन्तु ग्रहों का स्थान क्रान्तिवृत्त में होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि, जहां ग्रह हमें दिखाई देता है, वहां उसका बिम्ब होता तथा ग्रह का स्थान विम्ब से अन्यत्र क्रान्तिवृत्त अथवा राशिवृत्त में होता है। ग्रहबिम्ब पर किया गया कदम्बप्रोतवृत्त क्रान्तिवृत्त में जहां स्पर्श करता है, वह ग्रह स्थान कहलाता है। ग्रहस्थान तथा ग्रहबिम्ब का अन्तर ही शर होता है। कौन सा ग्रह रोहिणी शकट का भेदन करेगा इसका ज्ञान करने के लिए ग्रहों के शरांश जानना अनिवार्य है। भारतीय ज्योतिषशास्त्र के अनेक ग्रन्थों में ग्रहों के शरांश दिए गए है। -

	सूर्यसिद्धान्त	**सिद्धान्तशिरोमणि**	**महासिद्धान्त**	**सिद्धान्तदर्पण**	**आधुनिक**
चन्द्र	4 अंश 30 कला	4 अंश 30 कला	4 अंश 30 कला	5 अंश 9 कला	5 अंश 8 कला
मंगल	1 अंश 30 कला	1 अंश 50 कला	1 अंश 46 कला	1 अंश 51 कला	1 अंश 51 कला 1
बुध	2 अंश 0 कला	2 अंश 32 कला	2 अंश 18 कला	2 अंश 44 कला	7 अंश 0 कला 10
बृहस्पति	1 अंश	1 अंश 16 कला	1 अंश 14 कला	1 अंश 18 कला	1 अंश 18 कला 42
शुक्र	2 अंश	2 अंश 16 कला	2 अंश 10 कला	2 अंश 18 कला	3 अंश 23 कला 37
शनि	2 अंश	2 अंश 10 कला	2 अंश 10 कला	2 अंश 29 कला	2 अंश 29 कला 39

सारिणी के अनुसार 2 अंश से अधिक केवल चन्द्र, बुध, शुक्र एवं शनि के शरांश है। अर्थात् केवल 4 ग्रह रोहिणी शकट का भेदन कर सकते है, अन्य ग्रह नहीं। आचार्य वराहमिहिर ने बृहत्संहिता में कहा है कि केतु भी रोहिणी शकट का भेदन करता है। परन्तु यह संभव नहीं है। केतु चन्द्रकक्षा एवं क्रान्तिवृत्त का योगबिन्दु है अथवा शर का अभावस्थान है। जिस समय केतु से चन्द्रमा १ राशि आगे रहता है उस समय इसका दक्षिण शर 2 अंश 35 कला होता है । इसके पश्चात इसका दक्षिण शर बढ़ते-बढ़ते 5 अंश 8 कला हो जाता है । उस समय यह केतु से 3 राशि आगे हो जाता है। पुनः इसका दक्षिण शर कम होने लगता है तथा जब यह केतु से 5 राशि आगे अथवा राहु से 7 राशि पीछे रहता है उस समय तक इसका दक्षिण शर 2 अंश 35 कला से कम नहीं होता इसी सीमा के मध्य चन्द्रमा रोहिणी के शकट का भेद करता है परन्तु केतु द्वारा भेदन करना असम्भव है। अथवा यह भी सम्भव है कि शशी के स्थान पर शिखी पाठभेद हुआ हो।

रोहिणी शकटभेद का प्रभाव -

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि केवल चन्द्र, बुध शुक्र एवं शनि रोहिणी शकट भेद करने में समर्थ हैं, अन्य

ग्रह नहीं। रोहिणी शकटभेद को प्राचीन ऋषियों द्वारा उत्पातसूचक कहा है। आचार्य वराहमिहिर के अनुसार यदि रोहिणी शकट को शनि, मंगल या केतु भेदन करे तो अधिक क्या कहा जाय, पूर्ण विश्व ही अनिष्ट सागर में पड़ कर नष्ट हो जाता है, अर्थात् उस समयचारों तरफ अमंगल ही अमंगल दिखाई देते हैं।

रोहिणीशकटमर्कनन्दनो यदि भिनत्ति रुधिरोऽथवा शिखी।

किं वदामि यदनिष्टसागरे जगदशेषमुपयाति संक्षयम्।।[5]

बृहत्संहिता की भटोत्पली टीका के मयूरचित्रकाध्याय में भटोत्पल द्वारा आचार्य गर्ग के मत का उल्लेख किया गया है। इस मत के अनुसार अनुसार यदि रोहिणी शकट को शनि, मंगल या केतु भेदन करें तो प्रलय की स्थिति उत्पन्न हो जाती है-

रोहिणीशकटं भौमो भिनत्त्यर्कसुतोऽथवा।

केतुर्वा जगतो ब्रूयात् प्रलयं समुपस्थितम्।।[6]

चन्द्र द्वारा शकटभेद का फल कहते हैं कि यदि रोहिणी शकट के मध्य स्थित होकर चन्द्रमा गमन करें तो आश्रयरहित, बच्चों के लिये भोजन माँगते हुये, सूर्य किरण से अत्यन्त उष्ण जल पीते हुये लोग (प्रजागण) अनिश्चित स्थान पर गमन करते

रोहिणीशकटमध्यसंस्थिते चन्द्रमस्यशरणीकृता जनाः।

क्वापि यान्ति शिशुयाचिताशनाः सूर्यतप्तपिठराम्बुपायिनः।।[7]

इसी प्रकार यदि रोहिणीशकट का भेदन करते हुये शुक्र गमन करें तो पातकी (ब्रह्महत्या करने वाले की तरह) होकर पृथ्वी केश और अस्थिखण्डों से शबल (विचित्र वर्ण की) होकर कापालिक की तरह व्रत धारण करती है। जिस तरह ब्रह्महत्या करने वाले मनुष्य पापशान्ति के लिये मनुस्मृति आदि के अनुसार केश और अस्थिखण्डों को धारण करके कापालिक-व्रत धारण करते हैं, उसी तरह केश और अस्थिखण्डों से व्याप्त होकर पृथ्वी कापालिक की तरह व्रत धारण करती है अर्थात् पृथ्वी पर अत्यधिक भारी महामारी पड़ती है।

प्राजापत्ये शकटे भिन्ने कृत्वेव पातकं वसुधा।

काग केशास्थिशकलशबला कापालमिव व्रतं धत्ते।।[8]

ग्रहलाघवाकारआचार्य गणेशदैवज्ञ के मतानुसार यदि किसी ग्रह का दक्षिणशर वृषराशि के 17 अंश में 50 अङ्गुल से अधिक हो तो वह ग्रह रोहिणी शकट का भेदन करता है। यदि रोहणी शकट का भेदन मङ्गल, शनि अथवा चन्द्रमा करता है तो वह जन हानि करने वाला होता है।

[5]बृहत्संहिता, मयूरचित्रकाध्यायः, 14

[6]बृहत्संहिता, मयूरचित्रकाध्यायः, 14 की भटोत्पली टीका

[7]बृहत्संहिता, रोहिणीयोगाध्यायः, 30

[8]बृहत्संहिता, शुक्रचाराध्यायः, 25

गविनगकुलवे खगोऽस्य चेद् यमदिगिषुः खशराङ्गुलाधिकः।

कभशकटमसौ भिनत्त्यसृक् शनिरुड्डपो यदि चेज्जनक्षयः।।[9]

आचार्य के अनुसार मङ्गल, शनि अथवा चन्द्रमा रोहिणी शकट का भेदन करते हैं। तथा पुनः शकटभेद का वैशिष्ट्य कहते हैं कि राहु जब तक पुनर्वसु से आठ नक्षत्र (अर्थात-पुनर्वसु, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी हस्त तथा चित्रा) पर्यन्त (किसी भी नक्षत्र में रहता है तब तक चन्द्रमा भौम तथा शनि द्वारा रोहिणी शकट भेदन करता है। परन्तु उदयास्ताधिकारोक्त श्लोकानुसार मंगल तथा शनि के पात पुनर्वसु नक्षत्र से लेकर आगे के आठ नक्षत्रों में होने पर भी ये दोनों रोहिणी शकटभेद नहीं करते क्योंकि उक्त पात अत्यन्त अल्प गति होने के कारण वह शकटभेद युगान्तर (अन्य युगों) में होगा। सम्प्रति भौम तथा शनि का जो पात है उससे शकटभेद नहीं हो सकता।

स्वर्भानावदितिभतोऽष्टऋक्षसंस्थे शीतांशुः कभशकटं सदा भिनत्ति ।

भौमार्योः शकटभिदा युगान्तरे स्यात् सेदानीं न हि भवतीदृशि स्वपाते ।।[10]

अद्भुतसागर में गर्ग -

दूरगो निकटगोऽथ वा शशी दक्षिणे पथि यथातथास्थितः ।[11]
रोहिणीं यदि युनक्ति सर्वथा कष्टमेव जगतो विनिर्दिशेत् ।।
ताडयेद्यदि च योगतारकामावृणोति वपुषा यदापि च ।
ताडने भयमुशन्ति दारुणं छादनैर्नृपवधोऽङ्गनाकृतः ।।
रोहिणीशकटमध्यसंस्थिते चन्द्रमस्यशरणीकृता जनाः ।
क्वापि यान्ति शिशुयाचिता जनाः सूर्यतप्तपिठराम्बुपायिनः ।।

यदि दूर स्थित या समीप स्थित चन्द्रमा रोहिणी के दक्षिणगत होकर रोहणी से समागम करे तो संसार को दुःखी करने वाला होता है। यदि चन्द्रमा रोहिणी की योगतारा को भेदित (श्रृङ्ग के एक देश से स्पर्श) करे या अपने बिम्ब से उसे आच्छादित करे तो भेदित करने से कठोर भय और छादित करने से स्त्री के द्वारा राजा का मरण करने वाला होता है।यदि रोहिणी शकट के मध्य में स्थित होकर चन्द्रमा गमन करे तो आश्रयरहित, बच्चों के लिए भोजन मांगते हुए, सूर्यकिरण से जलपात्र का अत्यन्त उष्ण जल पीते हुये लोग (प्रजागण) अनिश्चित स्थान पर गमन करते हैं अर्थात् लोग अन्न और जल के लिए व्याकुल होकर इधर-उधर भटकने लगते हैं।

शकट भेदैर्दुर्भिक्षानावृष्टिरीतिभयम्। श्रृङ्गोल्लेखने शस्त्रकोपः। उभयश्रृङ्गपरिष्वङ्गे जनमारः। शुक्रबृहस्पतिबुधसंयोगे शूक-धान्यतिलमाषविनाशः। शौरस्य मध्यदेशाभावः। भौमस्य शस्त्रकोपः। केतोर्भयदुर्भिक्षप्रादुर्भावः। पराशरः[12]

---

[9]ग्रहलाघवम् नक्षत्रच्छायाधिकारः-7

[10]ग्रहलाघवम् नक्षत्रच्छायाधिकारः 7

[11]अद्भुतसागरः चन्द्राद्भुतावर्त्तःपृ. सं.- 81

यदि चन्द्रमा रोहिणी-शकट को भेदित (श्रृङ्ग के एक देश से स्पर्श) करे तो दुर्भिक्ष, अनावृष्टि और अतिवृष्टि आदि इतिभय करता है। यदि एक श्रृङ्ग से युक्त हो तो शस्त्रकोप और दोनों श्रृङ्गों से शकट का आलिङ्गन करे तो लोगों का मरण करने वाला होता है। यदि शुक्र, वृहस्पति और बुध रोहिणी-शकट से संयोग करे तो शूकधान्य (सूंड़ वाला धान्य, जौ आदि), तिल, माषादि का विनाश होता है। शनि से शकटभेदन हो तो मध्य देश का नाश होता है। मङ्गल से भेदित होने पर शस्त्रकोप और केतु से शकटभेद होने पर दुर्भिक्ष का प्रादुर्भाव होता है।

अद्भुतसागरः

भित्त्वा मघां विशाखां भिन्दन् भौमः करोति दुर्भिक्षम् ।
मरकं करोति घोरं यदि भित्त्वा रोहिणीं याति ॥[13]

मघा नक्षत्र का भेदन करने के उपरान्त मंगल यदि विशाखा नक्षत्र का भेदन करता हो तो दुर्भिक्ष करता है। यदि रोहिणी नक्षत्र का भेदन करता हो तो जनों में भयङ्कर मरक (भुखमरी) करता है।

अद्भुतसागरःपराशर- [14]

प्राजापत्ये मद्रकपाञ्चालकाशि-कोशलाङ्गशाकटिकाश्चालोड्यन्ते ।

यदि रोहिणी में विचरण करता हो तो मद्र, पञ्जाब, काशी, कोशल और अङ्ग देशवासी तथा गाड़ी से आजीविका वालों का नाश होता है।

महाभारत युद्ध के समय कौरव और पाण्डवों की सेनाओं के वध के निमित्त कहा गया है कि उस समय शनैश्चर रोहिणी नक्षत्र का भेदन करते हुए स्थित था-[15]

रोहिणीं पीडयन्नेव स्थितो राजन् शनैश्चरः ॥

गर्गवचनम् -

रोहिणीशकटं भौमो भिनत्त्यर्कसुतोऽथ वा ।
केतुर्वा जगतो ब्रूयात् प्रलयं समुपस्थितम् ॥

यदि रोहिणी शकट का भेदन मङ्गल, शनि या केतु करे तो संसार में प्रलयंकारी दृश्य उपस्थित हो जाता है।देवल के अनुसार [16]कृत्तिका, रोहिणी और मृगशिरा नक्षत्र पृथिवी के मध्य भाग में कहे गये हैं। इन नक्षत्रों में १५ आग्नेय केतुओं का उदय होता है। आग्नेय केतु देखे जाने पर प्रजाओं का निश्चित क्षय होता है। राजा लोग हमेशा उद्विग्न और लोगों की मृत्यु होती है।

---

[12] अद्भुतसागरः चन्द्राद्भुतावर्त्तःपृ. सं.- 81

[13]बृहत्संहिता, भौमचाराध्यायः -9

[14] अद्भुतसागरः चन्द्राद्भुतावर्त्तःपृ. सं.- 243

[15] अद्भुतसागरः चन्द्राद्भुतावर्त्तःपृ. सं.- 243

[16]अद्भुतसागरः चन्द्राद्भुतावर्त्तःपृ. सं.- 249

रोहिणीनां प्रागुत्तरेणाद्या तारोपसृष्टा मगधेशान् भुजगाँश्च पीडयति । उत्तरेण द्वितीया शस्यं सलिलं चोपतापयति । उत्तर एव तृतीया सा भूपान् महान्ति च कुलानि । दक्षिणपूर्वा चोपतप्ताबीजोपतापिनी दक्षिणतः । दक्षिणतः पञ्चमी प्रजा-नामुपतापाय । युगपदुपसृष्टाः सर्वा मौञ्जिपुरुषादगौडक-अन्नानांपञ्चालबन्धुधुर्यमहिषकुरुजाङ्गलशूरसेनानाम् । शालयः पीड्यन्ते । अस्यां पार्थिवानां शस्त्रप्रादुर्भावश्च । यच्चैकैकश उक्तम् ।[17]

रोहिणी नक्षत्र की पाँच ताराओं में पूर्वोत्तर भाग में स्थित प्रथम तारा पीड़ित हो तो मगध के राजा और सर्पों को पीड़ा होती है। सबसे उत्तर में स्थित द्वितीय तारा पीड़ित हो तो धान्य और जल (वर्षा) का नाश होता है। उत्तर भाग में स्थित तीसरी तारा पीड़ित हो तो राजाओं और श्रेष्ठ कुलों का नाश, दक्षिण-पूरब में स्थित चौथी तारा पीड़ित हो तो बीजों का नाश और दक्षिण भाग में अवस्थित पाँचवीं तारा पीड़ित हो तो प्रजाओं का नाश होता है। यदि सभी तारायें एक साथ पीड़ित हों तो मौञ्जि, पुरुषाद, गौड, पाञ्चाल, बन्धुधुर्य, महिषक, कुरु, जाङ्गल और शूरसेन देश, अन्न, धान्य ये सभी पीड़ित होते हैं।

भिनत्ति योगतारां च पितृब्धातृभयोः कुजः।
तदा भूपाहवैर्भूमिर्नूनं भ्रमति चक्रवत् ।। [18]

यदि मङ्गल मघा एवं रोहिणी नक्षत्र के योगतारा का भेदन करता है। तब वह राजाओं में हाहाकार तथा पृथ्वी चक्र की भांति भ्रमित हो जाती है।

भिनत्ति रोहिणीचक्रं शुक्रः पैतृभतारकम्।
यदा तदा करोत्येनां कपालास्थिमयीं धराम् ।।[19]

यदि शुक्र रोहिणी चक्र का अथवा मघा नक्षत्र का भेदन करें तब सम्पूर्ण पृथ्वी को अस्थि और कपालमयी कर देता है।

स्पृशेल्लिखेत् प्रमर्वेद् वा रोहिणीं यदि लोहितः ।
तिष्ठते दक्षिणो वाऽपि तदा शोक-भयंकरः ।।[20]

यदि मंगल रोहिणी नक्षत्र का स्पर्श करे, भेदन करे और प्रमर्दन करे अथवा दक्षिण में निवास करे तो भयंकर शोक की प्राप्ति होती है ।

रोहिणीं च ग्रहो हन्यात् द्वौ वाऽथ बहवोऽपि वा।
अपग्रहं तदा विन्द्याद् भय वाऽपि न संशयः ।।[21]

यदि रोहिणी नक्षत्र को एक ग्रह, दो ग्रह या बहुत ग्रह हनन करें या घात करें तो अपग्रह होता है और भय एवं आतंक भी व्याप्त रहता हैइसमें सन्देह नहीं है।

---

[17] अद्भुतसागरः ऋक्षाद्भुतावर्त्तःपृ. सं.- 249
[18] वशिष्ठसंहिता, भौमचाराध्यायः - 11
[19] वशिष्ठसंहिता, शुक्रचाराध्यायः - 11
[20] भद्रबाहुसंहिता, एकोनविंशतितमोऽध्यायः - 10
[21] भद्रबाहुसंहिता, चतुरविंशतितमोऽध्यायः - 32

सारांश – भगवानवेदपुरुष के नेत्र स्वरूप ज्योतिषशास्त्र में सम्पूर्ण कालगणना का मुख्य आधार नक्षत्र है। 27 नक्षत्रों का उनके योगताराओं के आधार पर नामकरण किया गया है। इन नक्षत्रों की स्थिति सूर्य के भ्रमणवृत्त के आसपास दिखाई देती है। इन नक्षत्रों में रोहिणी नक्षत्र जिसका आकार शकट के समान दिखाई देता है, की स्थिति सूर्य के भमणवृत्त से 2 अंश की दूरी पर है। आकाशमण्डल में अपनी-अपनी कक्षाओं में भ्रमण करते हुए ग्रह जब इस शकट में प्रविष्ट होते हैं तो उसे दैवज्ञों द्वारा रोहिणीशकट भेद कहा है। शरांश दो अंश से अधिक होने के कारण इस रोहिणी शकट का भेदन केवल चन्द्र, बुध, शुक्र एवं शनि ही करते है। उक्त ग्रहों के भेदन का फल अनिष्ट, अमंगल दुर्भिक्ष, प्रलय जैसी स्थिति होना आदि संहिता ग्रन्थों में वर्णित है। अत: जब कभी खगोल में यह स्थिति बनने वाली होती है तो इन दुर्भिक्षों से बचाव के उपाय कर प्राकृतिक आपदाओं से बचा जा सकता है।

सन्दर्भग्रन्थसूची-

1- सूर्यसिद्धान्तः, पं- कपिलेश्वर शास्त्री कृत श्रीतत्त्वामृत संस्कृत प्रज्ञावर्द्धिनी हिन्दी टीका सहित, सम्पादक डॉ- सत्येन्द्र मिश्र, चौखम्बा संस्कृत भवन वाराणसी।

2- बृहत्संहिता, भट्टोत्पल्लवृत्ति समन्वित, व्याख्याकार पं. अच्युतानन्द झा, चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी।

3- ग्रहलाघवम्, श्रीमद् गणेशदैवज्ञ प्रणीत, व्याख्याकार डॉ- ब्रह्मानन्दत्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

4- सूर्यसिद्धान्तः, प्रो. रामन्द्रपाण्डेय, चौखम्बा संस्कृत भवन वाराणसी।

5- मुहूर्तचिन्तामणि, पीयुषधारा टीका, व्याख्याकार श्री विन्ध्येश्वर प्रसाद द्विवेदी, सम्पादक डॉ- ब्रह्मानन्द त्रिपाठी, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

6- भारतीय ज्योतिष शास्त्र शंकरबालकृष्णदीक्षित IE DIRECTOR GENERAL OF OBSERVATORIES, NEW DELHI INDIA METEOROLOGICAL DEPARTMENT MINISTRY OF TOURISM AND CIVIL AVIATION GOVERNMENT OF INDIA

7- ब्राह्मस्फुटसिद्धान्तः, सम्पादक पण्डित रामस्वरूप शर्मा, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ एस्ट्रोनामिकल एण्ड संस्कृत रिसर्च नव देहली।

8- अद्भुतसागरः, श्री बल्लाासेनविरचित, हिन्दी टीकाकार डा. शिवकान्त झा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।

9- वशिष्ठसंहिता, वसिष्ठ विरचित, सम्पादक एवं टीकाकार डा. गिरिजाशंकर शास्त्री, चैखम्बा संस्कृत भवन वाराणसी।

10-भद्रबाहुसंहिताश्री भद्रबाहु विरचित, सम्पादक एवं अनुवादक डा. नेमीचन्द्रशास्त्री, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन।

11-भारतीय ज्योतिष, नेमीचन्द शास्त्री, ज्ञानपीठ प्रकाशन।